पाठ : 1 हम पंछी उन्मुक्त गगन के
लेखक : शिवमंगल सिहं 'सुमन'

शब्दार्थ :

पुलकित	-	खुशी से फड़कते
कटुक	-	कड़वी
निबौरी	-	नीम का फल
कनक	-	सोना
फुनगी	-	टहनी का सबसे ऊपरी भाग

प्रश्नोत्तर :-

प्रश्न 1: हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद क्यों नहीं रहना चाहते ?

उत्तर : पक्षी के पास वो सारी सुख सुविधाएँ हैं, जो उनके जीवन के लिए आवश्यक है। परन्तु वह स्वतन्त्रता नहीं है, जो उन्हें प्रिय हैं। वे इस खुले आकाश में आज़ादीपूर्वक उड़ना चाहते हैं। इस प्रकार की उड़ान उनमें नई उमंग व प्रसन्नता भर देती है, जो पिंजरे की सुख-सुविधाएँ नहीं दे सकती है। इसलिए हर तरह की सुख सुविधाएँ पाकर भी पक्षी पिंजरे में बंद नहीं रहना चाहते हैं।

प्रश्न 2: पक्षी उन्मुक्त रहकर अपनी कौन-कौन सी इच्छाएँ पूरी करना चाहते हैं ?

उत्तर : पक्षी उन्मुक्त रहकर जंगल की कड़वी निबौरी खाना चाहते हैं, प्रकृति के सुन्दर रूप का आनन्द लेना चाहते हैं, खुले नीले आकाश में उन्मुक्त उड़ान भरना चाहते हैं। वे नदियों का शीतल जल पीना चाहते हैं, वे तो क्षितिज के अन्त तक उड़कर जाना चाहते हैं। इसके लिए उनको अपने प्राणों की भी चिन्ता नहीं है। वे पेड़ की टहनी के सबसे ऊँचे सिरे पर बैठकर झूला झूलना चाहते हैं |

प्रश्न 3: भाव स्पष्ट कीजिए-

'या तो क्षितिज मिलन बन जाता, या तनती साँसों की डोरी |'

उत्तर : क्षितिज का अर्थ है जहाँ धरती आकाश मिलते हैं और पक्षी क्षितिज के अन्त तक जाने की लालसा रखते हैं फिर चाहे उन्हें किसी भी स्थिति का सामना करना पड़े। वो चाहते हैं या तो आज वह क्षितिज का अन्तिम छोर ही प्राप्त कर लें अन्यथा अपने प्राणों को न्योछावर कर दें।

प्रश्न 4 : पक्षी हमसे क्या चाहते हैं ?

उत्तर : पक्षी हमसे अपने उड़ने का अधिकार चाहते हैं | इसके बदले वे अपना घोंसला और टहनी का आश्रय भी देने को तैयार हैं |

प्रश्न 5 : पक्षियों को पिंजरे में बंद करने से केवल उनकी आज़ादी का हनन ही नहीं होता, अपितु पर्यावरण भी प्रभावित होता है | अपने विचार लिखिए |

उत्तर : पक्षियों को पिंजरे में बंद करने से एक ओर जहाँ उनकी आज़ादी छिन जाती है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरण भी बुरी तरह प्रभावित होता है | पक्षी पर्यावरण में संतुलन बनाए रखते हैं | पक्षियों के न रहने पर यह संतुलन बिगड़ने लगता है | कुछ पक्षी, जैसे चील,बाज,कौआ आदि मरे हुए जानवरों को खाकर पर्यावरण को स्वच्छ बनाते हैं | इनके न रहने से इन मरे हुए जीवों से वातावरण में बदबू फैल जाएगी | अनेक पक्षी पौधों के परागण में सहायता करते हैं, जिससे फल और अन्य खाद्य अधिक मात्रा में पैदा होते हैं | पक्षी अपनी विभिन्न प्रकार की आवाज़ों से वातावरण को सजीव बनाते हैं |

पाठ 2 दादी माँ

लेखक : शिवप्रसाद सिंह

शब्दार्थ :

अनमना - बेचैन, अनमना
प्रतिकूलता - विपरीत स्थिति
अभयदान - निर्भीकता प्रदान करना
अतुल - बहुत अधिक

प्रश्न 1: लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-साथ बचपन की और किन-किन बातों की याद आ जाती है ?

उत्तर : लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-साथ गाँव,घर,और परिवार की अनेक बातें याद आती हैं -

- क्वार के दिनों में जलाशय के झागभरे पानी में कूदकर नहाना |
- आषाढ़ में आम-जामुन,अगहन में चिउड़ा-गुड़ ,चैत में लाई तथा गुड़ की पट्टी खाना |
- बीमार होने पर दादी माँ की स्नेहपूर्ण देखभाल |
- किशन भैया की शादी में औरतों का अभिनय चोरी से देखना |
- दादी माँ द्वारा धन्नो को कर्ज के लिए डाँटना, फिर कर्ज माफ़ कर देना |

प्रश्न 2: दादा की मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति खराब क्यों हो गई थी?

उत्तर : दादा की मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति इसलिए खराब हो गई क्योंकि उनके श्राद्ध में लेखक के पिताजी ने अतुल संपत्ति व्यय की और पहले का उधार लिया रूपया कोई नहीं दे रहा था।

प्रश्न 3 : दादी माँ के स्वभाव का कौन - सा पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों?

उत्तर : दादी माँ का स्वभाव दयालु है। उनके स्वभाव का यही पक्ष सबसे अच्छा लगता है। दादी माँ अपने घर के सदस्य से लेकर गरीबों तक की मदद करने से पीछे नहीं हटती हैं।

जैसे- (i) रामी चाची के उधार न चुकाने पर भी दादी माँ उनकी बेटी की शादी में आर्थिक सहायता करती हैं।

(ii) घर की आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण दादी माँ ने दादा जी द्वारा पहनाया गया कंगन अपने बच्चों को दे दिए।

प्रश्न 4 : दादी माँ रामी की चाची पर क्यों बिगड़ रही थीं ?

उत्तर : रामी की चाची ने दादी माँ से कर्ज लिया था | समय बीत गया था और वह न मूल पैसे दे रही थी और न सूद, इसलिए दादी उस पर बिगड़ रही थीं |

प्रश्न 5 : देबू की माँ ने लेखक से हाथापाई क्यों शुरू कर दी ?

उत्तर : किशन भैया की बारात चले जाने के बाद रातभर स्त्रियों के अभिनय का कार्यक्रम था | लेखक चादर ओढ़कर दालान में सोया था और सबकी नज़र बचाकर अभिनय का मजा ले रहा था | उसी समय भाभी की किसी बात पर उसकी हँसी रुक न सकी | बस, देबू की माँ ने चादर खींच ली और हाथापाई शुरू हो गई |

पाठ 3: हिमालय की बेटियाँ (लेखक : नागार्जुन)

शब्दार्थ :

सभ्रांत	-	शिष्ट
कौतुहल	-	जिज्ञासा
प्रतिदान	-	लौटाना
खुमारी	-	आलस
उपत्यका	-	तराई , घाटी

प्रश्न 1: नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफ़ी पुरानी है। लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें और किन रूपों में देखते हैं ?

उत्तर : नदियों को माँ मानने की परपंरा से पहले लेखक इन नदियों को स्त्री के सभी रूपों में देखते हैं | लेखक नदियों को हिमालय की बेटी कहते हैं । कभी वह इन्हें प्रेयसी की भांति प्रेममयी कहते हैं , जिस तरह से एक प्रेयसी अपने प्रियतम से मिलने के लिए आतुर है उसी तरह ये नदियाँ सागर से मिलने को आतुर होती हैं, तो कभी लेखक को उसमें ममता के स्वरूप में बहन के समान प्रतीत होती हैं जिनके सम्मान में वे हमेशा हाथ जोड़े शीश झुकाए खड़े रहते हैं ।

प्रश्न 2: सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं ?

उत्तर : इनकी विशेषताएँ इस प्रकार हैं :-

(i) सिंधु और ब्रह्मपुत्र ये दोनों ही महानदी हैं।

(ii) इन दोनों महानदियों में सारी नदियों का संगम होता है।

(iii) ये भौगोलिक व प्राकृतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण नदियाँ हैं। ये डेल्टाफार्म करने के लिए, मत्स्य पालन, चावल की फसल व जल स्रोत का उत्तम साधन है।

(iv) ये दोनों ही पौराणिक नदियों के रूप में विशेष पूज्यनीय व महत्वपूर्ण हैं।

प्रश्न 3: काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है ?

उत्तर: नदियों को लोकमाता कहने के पीछे काका कालेलकर का नदियों के प्रति सम्मान है। क्योंकि ये नदियाँ आरम्भिक काल से ही माँ की भांति भरण-पोषण करती आ रही हैं। ये हमें पीने के लिए पानी देती हैं तो दूसरी तरफ इसके द्वारा लाई गई ऊपजाऊ मिट्टी खेती के लिए बहुत उपयोगी होती है। हिन्दू धर्म में तो ये नदियाँ पौराणिक आधार पर भी विशेष पूजनीय हैं। हिन्दु धर्म में तो जीवन की अन्तिम यात्रा भी इन्हीं से मिलकर समाप्त हो जाती है। इसलिए ये हमारे लिए माता के समान हैं जो सबका कल्याण ही करती हैं ।

प्रश्न 4 : हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन-किन की प्रशंसा की है ?

उत्तर: लेखक ने हिमालय यात्रा में लेखक ने नदियों,पर्वतों,बर्फीली पहाड़ियों,हरी-भरी घाटियों,गहरी गुफाओं,उपवनों,वनों तथा सागरों की प्रशंसा की है|

व्याकरण : वर्ण-विचार

वर्ण- वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं,जिसके खंड या टुकड़े नहीं किए जा सकते हैं |

हिंदी वर्णमाला में वर्ण दो प्रकार के होते हैं -

स्वर- जिन वर्णों के उच्चारण के समय बिना किसी रूकावट के मुख से हवा निकलती है,उन्हें स्वर कहते हैं | जैसे - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

व्यंजन - जिन वर्णों के उच्चारण के समय मुख से निकलने वाली वायु में रूकावट पड़ती है,उन्हें व्यंजन कहते हैं | जैसे- क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, त वर्ग, प वर्ग, तथा य, र, ल, व,श, ष, स, ह

अनुनासिक जिस ध्वनि के उच्चारण में साँस की हवा कुछ तो नाक से निकल जाए और कुछ मुँह से निकले वह अनुनासिक ध्वनि कहलाती है | इसका चिह्न चंद्रबिंदु होता है |
जैसे - आँख , चाँद , आँगन आदि |

अनुस्वार जिस ध्वनि के उच्चारण में साँस की हवा केवल नाक से निकल जाए, वह अनुस्वार ध्वनि कहलाती है |
जैसे - संत , गंगा , पंख ,रंग आदि |

विसर्ग विसर्ग ध्वनि का उच्चारण ' ह ' ध्वनि के समान होता है |
जैसे- अतः, प्रातः आदि |

वर्ण-विच्छेद किसी शब्द में प्रयुक्त वर्णों को अलग-अलग करने को वर्ण-विच्छेद कहते हैं |

अभ्यास कार्य -

अभ्यास कार्य में प्रश्न संख्या 4,5,व 6 का कार्य नोटबुक में करवाया जायेगा| (पेज नं.25)

क्रियात्मक: औपचारिक पत्र

रेल यात्रा के दौरान सामान चोरी हो जाने की सूचना देते हुए रेलवे पुलिस अधीक्षक को पत्र लिखिए | **अभ्यास हेतु :**

(i) अपने क्षेत्र की गन्दगी की सूचना देते हुए नगर पालिका के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए |

(ii) किसी दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को अपने शहर की बसों की बिगड़ती हालत और कुव्यवस्था की जानकारी देते हुए पत्र लिखिए |

पाठ 4 कठपुतली (लेखक : भवानीप्रसाद मिश्र)

शब्दार्थ :

कठपुतली - धागे से बंधी गुड़िया जिसे अँगुलियों के इशारों पर नचाया जाता है

उबली - गुस्से से भर जाना

मन के छंद छूना - मन की बात सुनना

प्रश्न 1: कठपुतली को गुस्सा क्यों आया ?

उत्तर: कठपुतली को गुस्सा इसलिए आया क्योंकि वो धागे में बंधी हुई पराधीन है और वह स्वतंत्रता की इच्छा रखती है।

प्रश्न 2: कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है, लेकिन वह क्यों नहीं खड़ी होती?

उत्तर: कठपुतली को अपने पाँवों पर खड़ी होने की इच्छा है लेकिन वह खड़ी नहीं होती कयोंकि वह धागे से बंधी हुई होती है, उसके अन्दर स्वतंत्रता के लिए लड़ने की क्षमता नहीं है और अपने पैरों पर खड़े होने की शक्ति भी नहीं है।

प्रश्न 3: पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को क्यों अच्छी लगी ?

उत्तर: पहली कठपुतली की बात दूसरी कठपुतलियों को अच्छी लगी क्योंकि पहली कठपुतली स्वतंत्र होने की बात कर रही थी और दूसरी कठपुतलियाँ भी बंधन से मुक्त होकर आज़ाद होना चाहती थीं। किसी भी कठपुतली को धागे में बंधे रहना पसंद नहीं |

प्रश्न 4: 'कठपुतली' कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहते हैं ?

उत्तर: कविता के माध्यम से कवि ने स्वतंत्रता के महत्व को रेखांकित किया है, साथ ही स्वतंत्रता के साथ आनेवाली जिम्मेदारियों की तरफ सबका ध्यान आकर्षित किया है | आज़ाद होना सभी को अच्छा लगता है लेकिन आज़ादी का सही उपयोग कम ही लोग कर पाते हैं | इतना ही नहीं आज़ादी के बाद आत्मनिर्भर भी होना पड़ता है | आज़ादी हाँसिल करके अपनी जरूरतों के लिए दूसरों पर आश्रित नहीं रहा जा सकता | आज़ाद होने के बाद स्वावलंबी होना भी जरूरी होता है |

प्रश्न 5 : कठपुतली सजीव होती है या निर्जीव ?

उत्तर : कठपुतली निर्जीव होती है,लेकिन कविता में कवि ने उसका चित्रण सजीव रूप में किया है

व्याकरण : शब्द-विचार

शब्द : एक या एक से अधिक वर्णों से बने सार्थक ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं | शब्दों का वर्गीकरण निम्नलिखित चार आधारों पर किया गया है -

(i) स्रोत / उत्पत्ति के आधार पर
(ii) रचना / बनावट के आधार पर
(iii) प्रयोग के आधार पर
(iv) अर्थ के आधार पर

- **<u>स्रोत/उत्पत्ति के आधार पर :</u>** शब्द के चार प्रकार होते हैं -

(i) तत्सम शब्द - अग्नि, सूर्य , चन्द्र , गृह आदि
(ii) तद्भव शब्द - आग, सूरज, चाँद, घर आदि
(iii) देशजशब्द - खिड़की, गाड़ी, पगड़ी, चिड़िया आदि
(iv) विदेशी शब्द - बेगम, टिकट, कमीज़, जहाज़ आदि

<u>रचना/बनावट के आधार पर :</u> शब्दों के तीन भेद हैं -

(i) रूढ़ शब्द - पुस्तक, कमल, घर
(ii) यौगिक शब्द - रसोई+ घर (रसोईघर)
(iii) योगरूढ़ शब्द - जल+ द - जलद (बादल)

- **<u>प्रयोग के आधार पर :</u>** शब्द दो प्रकार के होते हैं -

(i) विकारी शब्द
(ii) अविकारी शब्द

- **<u>अर्थ के आधार पर :</u>** शब्द दो प्रकार के होते हैं -

(i) सार्थक शब्द
(ii) निरर्थक शब्द

अभ्यास कार्य -

अभ्यास कार्य में प्रश्न संख्या 2, 3, 5 का कार्य नोटबुक में तथा प्रश्न संख्या 6 ,7 का कार्य व्याकरण पाठ्यपुस्तक में करवाया जायेगा | (पेज नं.45, 46)

क्रियात्मक : संवाद लेखन

कुसंगति का त्याग और समय के सदुपयोग के संबंध में दो भाइयों के बीच संवाद लिखिए |

अभ्यास हेतु :

(i) आँखोंदेखी दुर्घटना के संबंध में पुत्र और पिता के मध्य संवाद लिखिए |
(ii) रेलवे स्टेशन के पूछताछ काउंटर पर यात्री तथा अधिकारी के बीच संवाद लिखिए |

व्याकरण : विलोम शब्द

व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक से 1 से 20 विलोम शब्द नोटबुक में लिखवाए जाएँगे |
(पेज नं. 51)

व्याकरण : भाषा,बोली,लिपि और व्याकरण

भाषा : भाषा वह साधन है, जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर,लिखकर,पढ़कर व सुनकर अपने मन के विचारों तथा भावों का आदान-प्रदान करता है |

भाषा के रूप : भाषा के दो रूप हैं -

(i) मौखिक (जैसे- कक्षा में अध्यापक बोलकर छात्रों को समझाते हैं |)

(ii) लिखित (जैसे-अध्यापक गणित के सवाल श्यामपट्ट पर लिखकर हल करते हैं |)

(iii)

बोली : किसी क्षेत्र विशेष में बोली जानेवाली भाषा बोली कहलाती है | जैसे-

हरियाणा	-	हरियाणवी
मणिपुर	-	मणिपुरी
राजस्थान	-	राजस्थानी
असम	-	असमिया
कश्मीर	-	कश्मीरी

लिपि : उच्चरित ध्वनियों को लिखने की विधि को लिपि कहते हैं | जैसे-

हिंदी	-	देवनागरी
अंग्रेजी	-	रोमन
उर्दू	-	फ़ारसी
पंजाबी	-	गुरूमुखी

व्याकरण : वह शाश्त्र जिसके द्वारा मनुष्य किसी भाषा को शुद्ध रूप से पढ़ना,लिखना व बोलना सीखता है, उसे व्याकरण कहते हैं |

व्याकरण के भाग :

(i) वर्ण-विचार

(ii) शब्द-विचार

(iii) वाक्य-विचार

(iv)

अभ्यास कार्य

अभ्यास हेतु प्रश्न संख्या 1,5,व 7 का कार्य नोटबुक में करवाया जायेगा | **(पेज नं. 11,12)**

क्रियात्मक : अपठित गद्यांश

' सहपाठी की मित्रता ' इस उक्ति में ----------

---------- अपना हानि - लाभ समझे | **(व्याकरण निपुण पेज नं. 267)**

अनुच्छेद लेखन

विद्यार्थी जीवन : **(व्याकरण निपुण पेज नं. 255)**

संकेत बिंदु - भूमिका - विद्यार्थी जीवन की अवस्था - विद्यार्थी का कर्तव्य - अनुशाशन - विद्यार्थी जीवन की उन्नति - निष्कर्ष |

अभ्यास हेतु :

(i) **मित्रता :** भूमिका - सच्ची मित्रता - जीवन का वरदान - मित्रता के लाभ - समापन |

(ii) **कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती :-** भूमिका - सभी का लक्ष्य - कोशिश द्वारा लक्ष्य की प्राप्ति - चींटी प्रेरणा का स्त्रोत - समापन |

व्याकरण : पर्यायवाची शब्द

व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक से 1 से 20 पर्यायवाची शब्द नोटबुक में लिखवाए जाएँगे |

(पेज नं. 47 ,48)

क्रियात्मक :चित्र वर्णन

चित्र वर्णन : (व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक पेज नं. 164)

दिए गए चित्र का 8 से 10 वाक्यों में वर्णन कीजिए |

पाठ 5 : मिठाईवाला (लेखक : भगवतीप्रसाद वाजपेयी)

शब्दार्थ :

मादक	-	मनमोहन
स्नेहाभिषिक्त	-	स्नेह से भरपूर
हिलोरें	-	लहरें
मृदुल स्वर	-	मीठा स्वर
अप्रतिभ	-	उदास

प्रश्नों के उत्तर :-

प्रश्न 1 : मिठाईवाला अलग-अलग चीज़ें क्यों बेचता था और वह महीनों बाद क्यों आता था?

उत्तर : मिठाईवाले का मुख्य उददेश्य बच्चों का सानिध्य प्राप्त करना था | बच्चे एक चीज़ से ऊब न जाएँ इसलिए मिठाईवाला अलग–अलग चीज़ें बेचता था। बच्चों में उत्सुकता बनाए रखने के लिए वह महीनों बाद आता था। साथ ही चीज़ें न मिलने से बच्चे रोएँ, ऐसा मिठाई वाला नहीं चाहता था।

प्रश्न 2: मिठाईवाले में वे कौन से गुण थे जिनकी वजहसे बच्चे तो बच्चे, बड़े भी उसकी ओर खिंचे चले आते थे

उत्तर: निम्नलिखित कारणों से बच्चे तथा बड़े मिठाईवाले की ओर खिंचे चले आते थे-

- मिठाई वाला मादक – मधुर ढंग से गाकर अपनी चीज़ों को बेचता था।
- वह कम लाभ में बच्चों को खिलौने तथा मिठाइयाँ देता था।
- उसके हृदय में बच्चों के लिए स्नेह था, वह कभी गुस्सा नहीं करता था।
- हर बार नई चीज़ें लाता था।
- पैसे न होने पर भी वह बच्चों को वस्तुएँ दे दिया करता था |

प्रश्न 3: विजय बाबू एक ग्राहक थे और मुरलीवाला एक विक्रेता। दोनों अपने-अपने पक्ष के समर्थन में क्या तर्क पेश करते हैं ?

उत्तर : एक ग्राहक के रूप में विजय बाबू अपना तर्क पेश करते हुए कहते हैं कि तुम लोगों को झुठ बोलने की आदत होती है। सबको एक ही भाव से सामान बेचते हो ग्राहक को अधिक दाम बताकर उलटा ग्राहक पर ही एहसान का बोझ लाद देते हो।

एक विक्रेता के रूप में मुरलीवाला अपना तर्क पेश करता हुआ कहता है – यह तो ग्राहकों का दस्तूर है कि दुकानदार चाहे हानि उठाकर ही चीज़ें क्यों न बेचे पर ग्राहक को हमेशा यही लगता है कि हम उन्हें लूट रहे हैं। ग्राहक को दुकानदार पर विश्वास नहीं होता है।

प्रश्न 4: खिलौनेवाले के आने पर बच्चों की क्या प्रतिक्रिया होती थी ?

उत्तर: खिलौनेवाले के आने पर बच्चे खिलौने देखकर पुलकित हो उठते थे। वे अपना खेल-कूद भूलकर उसकी ओर दौड़ पड़ते थे| जल्दबाज़ी में उन्हें अपने सामान,जूते-चप्पल आदि का ध्यान न रहता | बच्चों का झुंड खिलौनेवाले को चारों तरफ़ से घेर लेता था। वे पैसे लेकर खिलौने का मोलभाव करने लगते थे।

प्रश्न 5: रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से किसका स्मरण हो आया ?

उत्तर रोहिणी को मुरलीवाले के स्वर से खिलौनेवाले का स्मरण हो आया।

प्रश्न 6: किसकी बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया था ? उसने इन व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण बताया ?

उत्तर रोहिणी की बात सुनकर मिठाईवाला भावुक हो गया। बच्चों को खुश करने के लिए ही वह अलग-अलग वस्तुएँ लाया करता था | इस तरह के जीवन में उसे अपने बच्चों की झलक मिल जाती है। उसे ऐसा लगता है कि उसके बच्चे इन्हीं में कहीं हँस – खेल रहे हैं। यदि वो ऐसा नहीं करता तो उनकी याद में घुल-घुलकर मर जाता, क्योंकि उसके बच्चे अब जिंदा नहीं थे। इसी कारण उसने इन व्यवसायों को अपनाया।

बाल-महाभारत : (पाठ 1 से 10)

प्रश्न 1: महाभारत की रचना किसने की ?

उत्तर : महाभारत की रचना महर्षि पराशर के कीर्तिमान पुत्र वेद व्यास ने की |

प्रश्न 2: शांतनु द्वारा गंगा की शर्त मान लेने का क्या परिणाम हुआ ?

उत्तर : शांतनु द्वारा गंगा की शर्त मान लेने के बाद गंगा उनकी पत्नी बन गई | समय पाकर गंगा से शांतनु के कई तेजस्वी पुत्र हुए,किंतु गंगा उन बच्चों को पैदा होते ही नदी में बहा देती थी और ख़ुशी-ख़ुशी महल चली आती थी |

प्रश्न 3: भीष्म काशीराज की कन्याओं के स्वयंवर में क्यों गए ?

उत्तर: जब विचित्रवीर्य विवाह के योग्य हुए तो,भीष्म को उनके विवाह की चिंता हुई | उन्हें खबर लगी कि काशिराज की कन्याओं का स्वयंवर होनेवाला है | यह जानकार भीष्म बड़े खुश हुए और स्वयंवर में सम्मिलित होने के लिए काशी रवाना हो गए |

प्रश्न 4 : धृतराष्ट्र की कमज़ोरी क्या थी ?

उत्तर: धृतराष्ट्र की कमजोरी उनका पुत्र प्रेम था| वे अपने बेटे दुर्योधन से अपार स्नेह करते थे|

प्रश्न 5: सूर्य-पुत्र कर्ण का पालन-पोषण किसके घर हुआ ?

उत्तर : सूर्य-पुत्र कर्ण का पालन-पोषण अधिरथ नाम के एक सारथि के घर हुआ |

प्रश्न 6: कौरव विशेषकर भीम से क्यों जलते थे ?

उत्तर : भीम शारीरिक बल में सबसे बढ़कर था | वह दुर्योधन और उसके भाइयों को खेल-कूद में खूब तंग किया करता था | यद्यपि कौरवों के प्रति भीम के मन में कोई वैर-भाव नहीं था | वह बचपन के जोश में ऐसा करता था | फिर भी कौरव पांडवों से,विशेषकर भीम से जलते थे |

प्रश्न 7: इंद्र ने वरदान के साथ कर्ण को क्या शर्त बताई ?

उत्तर: इंद्र ने वरदान के साथ कर्ण को यह शर्त बताई कि युद्ध में वह जिस किसी को लक्ष्य करके इसका प्रयोग करेगा, वह अवश्य मारा जाएगा, किंतु इसका प्रयोग वह सिर्फ एक बार ही कर सकेगा | शत्रु को मारने के बाद यह पुन: इंद्र के पास चला आएगा |

प्रश्न 8 : द्रुपद के राजा बनने के बाद द्रौण क्या सोचकर उनके पास गए ?

उत्तर: द्रुपद के राजा बनने की खबर जब द्रौणाचार्य को जब मिली तो वे बड़े खुश हुए | उन्हें आश्रम में द्रुपद की लड़कपन में कही गई बात याद आई | वे सोचने लगे ," यदि द्रुपद आधा राज्य न भी देगा तो कम-से-कम कुछ धन तो जरूर ही देगा |"

पाठ 6: रक्त और हमारा शरीर (मौखिक)

(छात्रों द्वारा पाठ का वाचन करवाया जाएगा |)

व्याकरण : मुहावरे

व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक से 1 से 10 मुहावरे नोटबुक में लिखवाए जाएँगे |

(पेज नं. 219,220)

पाठ 7 : पापा खो गए (लेखक : विजय तेंदुलकर)

शब्दार्थ :

कर्कश	-	कठोर
कब्ज़ा	-	अधिकार
स्तब्ध	-	हैरान
हिचकिचाना	-	संकोच करना
प्रेक्षक	-	दर्शक

प्रश्न 1 : नाटक में आपको सबसे बुद्विमान पात्र कौन लगा और क्यों ?

उत्तर नाटक में सबसे बुद्धिमान पात्र कौआ है क्योंकि वह उड़-उडकर सारी दुनिया की खबर रखता था | उसे अच्छे-बुरे की पहचान थी | अन्ततः कौए ने ही अपनी सूझबूझ से लड़की के पापा को ढूंढने का उपाय बताया। उसी की योजना के कारण लैटरबक्स संदेश लिख पाता है।

प्रश्न 2 : पेड़ और खंभे में दोस्ती कैसे हुई?

उत्तर पेड़ और खंभा दोनों पास-पास खड़े होते हैं फिर भी बात नहीं करते थे। कई बार पेड़ ने उससे बात करने की कोशिश की पर खंभे ने कोई ज़वाब नहीं दिया। एक दिन जब ज़ोरों की आंधी आती है तब खंभा पेड़ के ऊपर गिरने से खुद को रोक नहीं पाता। उस वक्त पेड़ खंभे को संभाल लेता है और स्वयं ज़ख्मी हो जाता है। इसी कारण खंभे का गरूर भी खत्म हो जाता है और उसी दिन से दोनों में दोस्ती हो जाती है।

प्रश्न 3 : लैटरबक्स को सभी लाल ताऊ कहकर क्यों पुकारते थे?

उत्तर लैटरबक्स ऊपर से नीचे तक पूरा सिर्फ़ लाल रंग का था। वह बड़ों की तरह बातें भी करता था इसीलिए सभी उसे लाल ताऊ कहकर पुकारते थे।

प्रश्न 4 : लाल ताऊ किस प्रकार बाकी पात्रों से भिन्न है?

उत्तर पूरे नाटक में केवल लाल ताऊ ही एक ऐसा पात्र है जिसे पढ़ना-लिखना आता है। वह अपने-आप में मस्त रहता है। अकेले रहने पर भजन गुनगुनाते रहना उसकी आदत है। लाल ताऊ के यही गुण उसे अन्य सभी पात्रों से भिन्न बनाते हैं।

प्रश्न 5 : नाटक में बच्ची को बचानेवाले पात्रों में एक ही सजीव पात्र कौन-सा है ?

उत्तर नाटक में बच्ची को बचाने वाले पात्रों में कौआ ही एक मात्र सजीव पात्र है।

प्रश्न 6 : क्या वजह थी कि सभी पात्र मिलकर भी लड़की को उसके घर नहीं पहुँचा पा रहे थे?

उत्तर सभी पात्र मिलकर भी लड़की को उसके घर पर नहीं पहुँचा पा रहे थे। क्योंकि लड़की इतनी छोटी थी और इतनी भोली थी कि उसे अपने घर का पता, गली का नाम, सड़क का नाम,यहाँ तक की अपने पापा का नाम तक नहीं मालूम था। ऐसी अवस्था में लड़की को उसके घर तक पहुँचाना संभव नहीं था।

पाठ - 8 शाम एक किसान (लेखक : सर्वेश्वरदयाल सक्सेना)

शब्दार्थ :

साफ़ा	-	पगड़ी
चिलम	-	जिसमें आग रखकर चिलम भरी जाती है
दहकना	-	सुलगना , जलना
अँगीठी	-	जिसमें आग जलाई जाती है

प्रश्नों के उत्तर :

प्रश्न 1 आकाश की कल्पना साफ़े के रूप में क्यों की गई है ?

उत्तर : साफ़ा सिर पर बाँधा जाता है | आकाश पहाड़ के सिर पर प्रतीत होता है | ऐसा लगता है वह पहाड़ की चोटी को छू रहा हो, साथ ही बादलों के छोटे -छोटे टुकड़े सिर पर बंधे साफ़ों जैसे ही दिखाई देते हैं, इसलिए आकाश की कल्पना साफ़े के रूप में की गई है |

प्रश्न 2 कवि ने अन्धकार को भेड़ों के गल्ले जैसा क्यों कहा है ?

उत्तर : जब सूरज पश्चिम दिशा में चला जाता है तो पूरब में अन्धकार धीरे-धीरे बढ़ने लगता है | दूर से देखने पर कहीं अन्धकार तो कहीं धुंधला प्रकाश दिखाई देता है और ऐसा प्रतीत होता है जैसे वहाँ भेड़ों का झुंड बैठा हो | यही कारण है कि कवि ने अन्धकार को भेड़ों के गल्ले जैसा कहा है |

प्रश्न 3 : 'शाम एक किसान' कविता में चित्रित शाम और सूर्यास्त के दृश्य का वर्णन अपने कीजिए |

उत्तर : कविता में शाम को एक किसान के रूप में चित्रित किया गया है, जो पहाड़ के रूप में घुटने मोड़े बैठा है | उसके सिर पर आकाश का साफ़ा बंधा है और घुटनों पर नदी की चादर पड़ी है | वह डूबते सूरज की सुलगती चिलम पी रहा है | पास में ही पलाश के लाल -लाल फूलों की अँगीठी दहक रही है और दूर पूरब में अन्धकार भेड़ों के झुंड की तरह धीरे-धीरे बढ़ता आ रहा है | उसी समय मोर अचानक बोल उठता है, शाम रुपी किसान हड़बड़ाकर उठ गया, जिससे चिलम उलट गई और चारों ओर धुंआ उठने लगा अर्थात सूरज डूब गया तथा शाम बीत गई |

प्रश्न 4: किसान के सिर और घुटनों पर कौन-से वस्त्र हैं ?

उत्तर : किसान के सिर पर साफ़ा और घुटनों पर नदी की चादर पड़ी हुई है |

प्रश्न 5: पलाश के जंगल की तुलना अँगीठी से क्यों की गई है ?

उत्तर : पलाश के जंगल की तुलना अँगीठी से की गई है क्योंकि पलाश के फूल सुर्ख लाल होते हैं| पलाश के जंगल को दूर से देखने पर ऐसा लगता है जैसे अँगीठी दहक रही हो |

प्रश्न 6: आवाज़ से चिलम क्यों औंधी हो गई ?

उत्तर : आवाज़ सुनकर शाम रुपी किसान हड़बड़ाकर उठ गया होगा, जिससे असावधानी के कारण चिलम उलट गई होगी |

क्रियात्मक : विज्ञापन-लेखन

किसी पेन्सिल निर्माता कंपनी के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए |

अभ्यास हेतु -

(i) नोटबुक निर्माता कंपनी के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए |

(ii) किसी स्मार्ट फ़ोन निर्माता कंपनी के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए |

क्रियात्मक : अपठित काव्यांश

वीर जवानों सुनो, तुम्हारे सम्मुख----------

---------- वह फैलाता जाल है | (व्याकरण निपुण पेज नं . 269)

व्याकरण: श्रुतिसम्भिन्नार्थक शब्द

व्याकरण निपुण पाठ्यपुस्तक से 1 से 20 श्रुतिसम्भिन्नार्थक शब्द नोटबुक में लिखवाए जाएँगे |

(पेज नं. 55)

व्याकरण : विलोम शब्द

व्याकरण निपुण पुस्तक से 21 से 40 विलोम शब्द नोटबुक में लिखवाए जाएँगे |

(पेज नं. 51)

क्रियात्मक: औपचारिक पत्र

प्रधानाचार्य जी को आवेदनपत्र लिखिए जिसमें पुस्तकालय में से कुछ और हिंदी पत्रिकाएँ मँगवाने के लिए निवेदन किया गया हो |

अभ्यास हेतु :

(i) अपने घर में चोरी हो जाने की सूचना देते हुए पुलिसथाना अधिकारी को पत्र लिखिए|

(ii) किसी अन्य विद्यालय से क्रिकेट मैच के आयोजन की अनुमति माँगते हुए प्रधानाचार्य जी को पत्र लिखिए |

अनुच्छेद लेखन

भारत के राष्ट्रीय पर्व :

संकेत बिंदु - भूमिका - विविध राष्ट्रीय पर्व - ऐतिहासिक कारण - राष्ट्रीय पर्व मनाने का ढंग - सन्देश तथा कर्त्तव्य - निष्कर्ष |

अभ्यास हेतु :

(i) **छात्रों पर दूरदर्शन का प्रभाव :** भूमिका - मनोरंजन का माध्यम - शिक्षा का माध्यम- दूरदर्शन का सही उपयोग - समापन |

(ii) **परोपकार:** भूमिका - दूसरों की हित कामना - महापुरुषों के उदहारण - सामजिक जीवन में परोपकार आवश्यक - समापन |

पाठ 9 : चिड़िया की बच्ची (लेखक : जैनेंद्र कुमार)

शब्दार्थ :

अभिरुचि	-	दिलचस्पी
मसनद	-	तकिया
तृष्णा	-	चाह
नादान	-	नासमझ
चित्त	-	मन

प्रश्नों के उत्तर :-

प्रश्न 1: किन बातों से ज्ञात होता है कि माधवदास का जीवन संपन्नता से भरा था और किन बातों से ज्ञात होता है कि वह सुखी नहीं था?

उत्तर : माधवदास अपने लिए संगमरमर की एक नई कोठी बनवाते हैं। चिड़िया को धन का, सोने का घर बनवाने तथा मोतियों की झालर लटकाने का प्रलोभन देता है। वो चिड़िया से कहता है – "मेरे पास क्या नहीं है। जो माँगो मैं वही दे सकता हूँ।" माधवदास जी की इन बातों से ज्ञात होता है कि उनका जीवन संपन्नता से भरा था।

वहीं दूसरी ओर ऐसा भी लगता है कि धन-संपन्न होने के बावजूद भी वे सुखी नहीं है। माधवदास स्वयं भी चिड़िया से यह कहता है कि उसका महल सूना है | वहाँ कोई भी नहीं चहचहाता | इससे यह स्पष्ट होता है कि उनका जीवन सुखी नहीं था।

प्रश्न 2: माधवदास क्यों बार-बार चिड़िया से कहता है कि यह बगीचा तुम्हारा ही है? क्या माधवदास निःस्वार्थ मन से ऐसा कह रहा था ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : माधवदास ऐसा इसलिए कहता है क्योंकि उसे चिड़िया बहुत ही सुन्दर और प्यारी लगी। वह चिड़िया को हमेशा अपने पास रखना चाहता था। उसे देख-देख कर वह अपना मन बहलाना चाहता था। वह केवल अपनी खुशी के लिए, अपना मन बहलाने के लिए ऐसा कर रहा था। इसलिए माधवदास की इस भावना में उसका निजी स्वार्थ है।

प्रश्न 3: कहानी के अंत में नन्ही चिड़िया का सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने की बात पढ़कर तुम्हें कैसा लगा?

उत्तर : कहानी के अंत में हमने पढ़ा कि सेठ की सभी चेष्टाओं के बावजूद नन्ही चिड़िया सेठ के नौकर के पंजे से भाग निकलने में सफल होती है। यह कहानी का सुखद अंत है। यदि ऐसा नहीं होता तो कहानी का अंत अत्यंत दुखद होता और ऐसा प्रतीत होता है कि अच्छाई पर बुराई की जीत हो गई। परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं होता और चिड़िया सुरक्षित अपनी माँ के पास पहुँच जाती है। चिड़िया के अस्तित्व की सफलता उसके बंधन मुक्त होकर स्वच्छंदता पूर्वक आकाश में उड़ने में है। वह अपने परिवार तथा अपनी माँ का स्नेह पाकर खुश रहती है।

प्रश्न 4 : इस कहानी का कोई और शीर्षक देना हो तो आप क्या देना चाहेंगे और क्यों?

उत्तर : इस कहानी का शीर्षक **'जीवन का सच्चा सुख'** अधिक युक्तिपूर्ण प्रतीत होता है क्योंकि यहाँ जीवन के सुख को लेकर दो विचारों की टकराहट है। एक तरफ जहाँ धनी सेठ के लिए धन-दौलत, सुख सुविधाएँ ही जीवन की खुशी तथा वास्तविकता है। वहीं दूसरी ओर नन्ही चिड़िया के लिए उसकी माँ अमूल्य रत्न से भी अधिक मूल्यवान है।

प्रश्न 5 : क्या माधवदास ने सचमुच ही वह बगीचा चिड़िया के लिए बनवाया था ?

उत्तर : नहीं, माधवदास ने वह बगीचा अपने लिए बनवाया था | वे तो चिड़िया को अपने जाल में फँसाना चाहते थे, इसलिए ऐसा कहा था |

प्रश्न 6: माधवदास को चिड़िया कैसी लगी ?

उत्तर : माधवदास को चिड़िया बहुत ही सुन्दर और प्यारी लगी।

व्याकरण : विशेषण

जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता का बोध हो ,उन्हें विशेषण कहते हैं | विशेषण के चार भेद हैं -

(i) गुणवाचक विशेषण (ii) संख्यावाचक विशेषण
(iii) परिमाणवाचक विशेषण (iv) सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

- **गुणवाचक विशेषण :** जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुणों या दोषों का बोध कराते हैं,उन्हें गुणवाचक विशेषण कहा जाता है | जैसे-

अच्छा,आलसी,कड़वा,मीठा,ताकतवर,ग्रामीण,प्राचीन आदि |

- **संख्यावाचक विशेषण :** जो विशेषण शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध बोध कराते हैं,उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहा जाता है | इसके दो प्रकार होते हैं-

(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण : जैसे- मुझे चार कापियाँ चाहिए |
(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण : जैसे- थोड़े सेब मुझे भी दे दो |

- **परिमाणवाचक विशेषण :** जिन विशेषणों से संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के माप-तौल संबंधी विशेषता का बोध होता है, उन्हें परिमाणवाचक विशेषण कहा जाता है | इसके दो प्रकार होते हैं-

(i) निश्चित परिमाणवाचक विशेषण : पाँच लीटर दूध दे दो |
(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण : डिब्बे में बहुत चावल है |

- **सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण :** जब कोई सर्वनाम किसी संज्ञा के साथ लगकर उसकी विशेषता बताने,या उसकी ओर संकेत करने का काम करता है,तो उसे संकेतवाचक विशेषण कहा जाता है | जैसे- उस लड़की को बुलाओ |

अभ्यास कार्य -

अभ्यास कार्य में प्रश्न संख्या 2, 5, व 7 का कार्य नोटबुक में करवाया जायेगा| तथा प्रश्न संख्या 4, व 6 का कार्य पाठ्यपुस्तक में ही करवाया जायेगा (पेज नं.152 ,153)

पाठ 10 : अपूर्व अनुभव (लेखक : तेत्सुको कुरियानागी)

शब्दार्थ :

आरामदेह	-	आराम देने वाला
धकियाना	-	धक्का देना
द्विशाखा	-	पेड़ का वह भाग जहाँ दो शाखाएँ फूटती हैं
तरबतर	-	लथपथ

प्रश्नों के उत्तर :-

प्रश्न 1 : अपनी माँ से झूठ बोलते समय तोत्तो-चान की नज़रें नीचे क्यों थीं?

उत्तर : तोत्तो-चान अपनी माँ के इच्छा के विरूद्ध झूठ बोलकर यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाने के लिए लेकर जा रही थी। कहीं उसकी चोरी पकड़ी न जाए। इसी डर के कारण झूठ बोलते समय तोत्तो-चान की नज़रें नीचे थी।

प्रश्न 2 : यासुकी-चान को अपने पेड़ पर चढ़ाने के लिए तोत्तो-चान ने अथक प्रयास क्यों किया?

उत्तर : यासुकी-चान को पोलियो था, इसलिए वह किसी पेड़ पर नहीं चढ़ पाता था। तोत्तो-चान की अपनी इच्छा थी कि वह यासुकी-चान को अपने पेड़ पर आमंत्रित करके तमाम नईं-नईं चीज़ें दिखाए । यही कारण था कि उसे पेड़ पर चढ़ाने के लिए तोत्तो-चान ने अथक परिश्रम किया |

प्रश्न 3 : दृढ़ निश्चय और अथक परिश्रम से सफलता पाने के बाद तोत्तो-चान और यासुकी-चान को अपूर्व अनुभव मिला पर, दोनों में क्या अंतर रहे ? लिखिए।

उत्तर : यासुकी-चान तथा तोत्तो-चान दोनों को अन्ततः पेड़ पर चढ़ने में सफलता मिली परन्तु दोनों की सफलता का अनुभव अलग-अलग था। यासुकी-चान को पोलियो था| वह किसी पेड़ पर नहीं चढ़ पाता था फिर भी उसका लक्ष्य पेड़ पर चढ़ना था। परन्तु तोत्तो चान का उद्देश्य यासुकी-चान को पेड़ पर चढ़ाना था। तोत्तो-चान के अथक परिश्रम के कारण ही पहली बार पेड़ पर चढ़कर यासुकी-चान को अपूर्व खुशी मिली | तोत्तो-चान को भी अपने परिश्रम की सफलता पर अपूर्व संतुष्टि मिली।

प्रश्न 4 : 'यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह.....अंतिम मौका था।' लेखिका ने ऐसा क्यों लिखा होगा?

उत्तर : यासुकी-चान के लिए पेड़ पर चढ़ने का यह पहला और अंतिम मौका था। क्योंकि तोत्तो-चान के अथक परिश्रम के कारण ही यासुकी-चान पहली बार पेड़ पर चढ़ पाया | यासुकी-चान के लिए स्वयं अपने बल पर पेड़ पर चढ़ना संभव नहीं था और तोत्तो-चान के लिए भी दुबारा इस तरह का जोखिम उठाना संभव नहीं था।

प्रश्न 5 : तोमोए की क्या विशेषता थी?

उत्तर : तोमोए में हर एक बच्चा बाग के एक-एक पेड़ को अपने खुद के चढ़ने के लिए अपनाता था इसे उस बच्चे का निजी पेड़ कहा जाता था |

प्रश्न 6 : बच्चे दुसरे के पेड़ों पर क्यों नहीं चढ़ते थे ?

उत्तर : हर पेड़ किसी-न-किसी बच्चे की निजी संपत्ति होता था, इसलिए बिना अनुमति के बच्चे दुसरे के पेड़ों पर नहीं चढ़ते थे |